



वन उत्पादकता संस्थान, रांची



“औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन”

वन विज्ञान केंद्र, हिजली, खड़गपुर

पश्चिम बंगाल

दिनांक : 24.08.2021

तकनीकी हस्तांतरण हेतु भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा संचालित वन विज्ञान केंद्र के तहत दिनांक 24.08.2021 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डा.नितिन कुलकर्णी के सक्रिय पहल एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा के सफल मार्गदर्शन में आभासीय मंच के माध्यम से पश्चिम बंगाल के विभिन्न प्रमण्डलों के संयुक्त वन प्रबंधन समिति के 68 सदस्यों के लिए संस्थान द्वारा “औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन (Cultivation, Management and Presentation of Medicinal Plants)” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षुओं के अलावा भी लगभग 30-32 सदस्यो ने लाभ उठाया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन संस्थान के वैज्ञानिक श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर द्वारा किया गया। इन्होंने पश्चिम बंगाल के वन विज्ञान केंद्र हिजली खड़गपुर नोडल अधिकारी सह वन संरक्षक, हिजली राज्य वन प्रशिक्षण विद्यालय के निदेशक एवं विभिन्न 17 प्रमण्डलों के संयुक्त वन समिति के सदस्यों का “औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन” विषय पर प्रशिक्षण के लिए स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डा. नितिन कुलकर्णी ने पश्चिम बंगाल, वन विज्ञान केंद्र के तहत इस पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु डा. जोस. टी. मैथ्यू, (PCCF, CAMPA) West Bengal का स्वागत किया एवं उनकी भूमिका के लिए आभार व्यक्त किया एवं समस्त

प्रतिभागियों एवं आयोजन के सहयोग के लिए श्री अरुण मुखर्जी, सुश्री अनुसुया राय का स्वागत किया एवं बताया कि परिषद द्वारा बहुत जल्द सुकना केंद्र में एक वन विज्ञान केंद्र का स्थापना किये जाने के प्रयास जारी है। उन्होने इस पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया एवं बताया कि विषय की तकनीकी समझ के लिए संस्थान के ही वैज्ञानिक श्री अंशुमन दास द्वारा बंगला में अनुवाद किया जाएगा जो बंगाल के frontline staff के लिए मददगार होगा। डा. मैथ्यू का संस्थान से लगाव एवं विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का जिक्र करते हुए उन्होने बताया कि वन उत्पादकता संस्थान के लिए पश्चिम बंगाल में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा विकसित तकनीकी को हस्तांतरण करने में मैथ्यू साहब का योगदान अतुलनीय है। प्रतिभागियों से आग्रह किया कि जीविकोपार्जन में काफी सहायक औषधीय पौध उत्पादन तकनीकी का लाभ उठाएं एवं अपनी शंकाओं के समाधान हेतु हमारे संसाधन से सहयोग ले। औषधीय पौध की खेती तकनीक, प्रबंधन आप सबों के लिए सहायक सिद्ध होगा एवं शंकाओं के समाधान हेतु संस्थान का अवश्य सहयोग लें। उन्होने खुद से डा. जोस. टी. मैथ्यू को आशीर्वचन के लिए आमंत्रित किया।

मुख्य अतिथि डा. जोस. टी. मैथ्यू ने आभासीय मंच से कार्यक्रम का उद्घाटन किया एवं अपने सम्बोधन में कहा कि पश्चिम बंगाल वन विभाग एवं वन उत्पादकता संस्थान, रांची वानिकी क्षेत्र में एक नया अध्याय लिखने की स्थिति में पहुंच चुका है। उन्होने कहा कि संस्थान द्वारा विभिन्न परियोजनाओं का पश्चिम बंगाल में संचालन यह सुनिश्चित करता है कि वानिकी शोध का प्रवाह पश्चिम बंगाल से होकर देश के अन्य भागों में प्रवाहित होगी। हिजली राज्य वन प्रशिक्षण विद्यालय के निदेशक अनुसुया राय ने प्रशिक्षण की व्यवस्था के लिये संस्थान के निदेशक का आभार व्यक्त किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बतौर प्रशिक्षक संस्थान के वैज्ञानिक-ई, श्री संजीव कुमार, ने “औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन” विषय पर प्रशिक्षण देते हुए विभिन्न औषधीय पौध का वर्णन करते हुए बताया कि लगभग 18000 प्रकार के औषधीय पौध पाये जाते हैं। कुल 178 प्रजातियों से लगभग 100 मिट्रीक टन उत्पादन में 80% वनों से तथा 20% खेती द्वारा प्राप्त किया जाता है। कच्चा माल के आभाव में बड़ी-बड़ी कम्पनियां बंदी की ओर अग्रसर है। हमारा

प्रयास इन 80% वनौषधी का संरक्षण करना प्राथमिकता में होनी चाहिए। उन्होने बताया कि वनौषधी अथवा औषधीय पौध की उपयोग आयुर्वेद, एलोपैथ, यूनानी, होमियोपैथ आदि में होता है। उन्होने बताया कि 4000 से 10000 के करीब प्रजातियो विलुप्ति के कगार पर है जिसमे 28 प्रजाति विलुप्त हो चुकी हैं। दवा का निर्माण कइ औषधीय पौध को मिला कर किया जाता है यदि एक भी कम रह गया तो कारगर दवाई की कल्पना नही की जा सकती। पश्चिम बंगाल की भौगोलिक स्थिति की चर्चा करते हुए बताया कि पहाड़ों, हिमालयों और समुद्रों से घिरा होने के कारण औषधीय पौध उत्पादन की असीम सम्भावनाएं हैं लेकिन खेद है कि औषधीय पौध उत्पादन राज्यों में पश्चिम बंगाल का स्थान दिखाई नही देता। उन्होने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि कलकता एक बडी मंडी है अतः औषधीय पौध का उत्पादन एवं बाजार का लाभ उठाकर जीविकोपार्जन को वेहतर बनाया जा सकता है। श्री संजीव कुमार ने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि आप सभी समिति बनाकर उत्पादन करने से ही लाभ लिया जा सकता है।

संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री रविशंकर प्रसाद ने प्रमुख औषधीय पौधों (सतावर, तुलसी, गुडमार, लेमग्रास, भृगराज, पुदिना, सर्पगंधा, अश्वगंधा, एलोवेरा, आदि) का पूर्ण विवरण करते हुए उनके उपयोगी अंग (पत्ती, तना, मूल, जड़ आदि), उत्पादन क्षमता, विभिन्न रोगों में उनके उपयोग को विस्तार से बताया एवं चर्चा की।

संयुक्त वन समिति के सदस्यों के विभिन्न शंकाओं को संस्थान के वैज्ञानिक श्री संजीव कुमार, श्री अनुसुमन दास एवं श्री रवि शंकर प्रसाद ने सरलता से समाधान किया।

धन्यवाद ज्ञापन से पूर्व संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने NMPB से वित्तीय सहायता प्राप्त करने की सलाह देते हुये अमृता योजना को भी विस्तार से बताया एवं डा. जोस. टी. मैथ्यु, (PCCF, CAMPA) West Bengal के सहयोग तथा मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होने पश्चिम बंगाल के वन विज्ञान केंद्र हिजली खरगपूर नोडल अधिकारी सह वन संरक्षक, श्री अरुण मुखर्जी, राज्य वन प्रशिक्षण विद्यालय, हिजली के निदेशक श्रीमती अनुसुया राय एवं विभिन्न 17 वन प्रमण्डलों के संयुक्त वन समिति के प्रतिभागियों का धन्यवाद कर ते हुये प्रशिक्षक श्री संजीव

कुमार, श्री रवि शंकर प्रसाद, अनुवादक श्री अंसुमान दास की सराहना करते हुये धन्यवाद दिया।
संस्थान के विस्तार प्रभाग, सूचना तकनीकी प्रभाग, एवं सम्पदा प्रभाग के सहयोगियों का धन्यवाद
करते हुए कार्यक्रम समापन किया गया।



Date– 24.08.2021



**Training on
“Cultivation, Management & Presentation of
Medicinal Plants”**



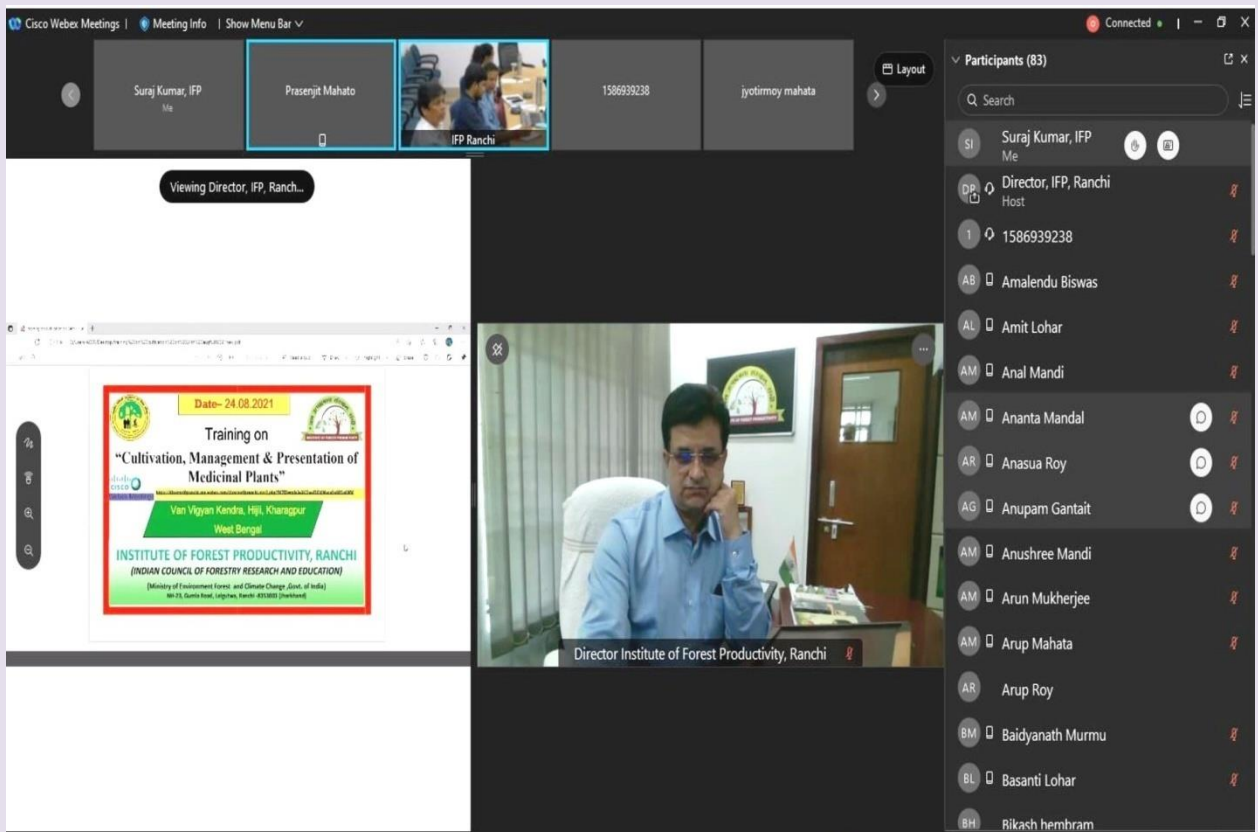
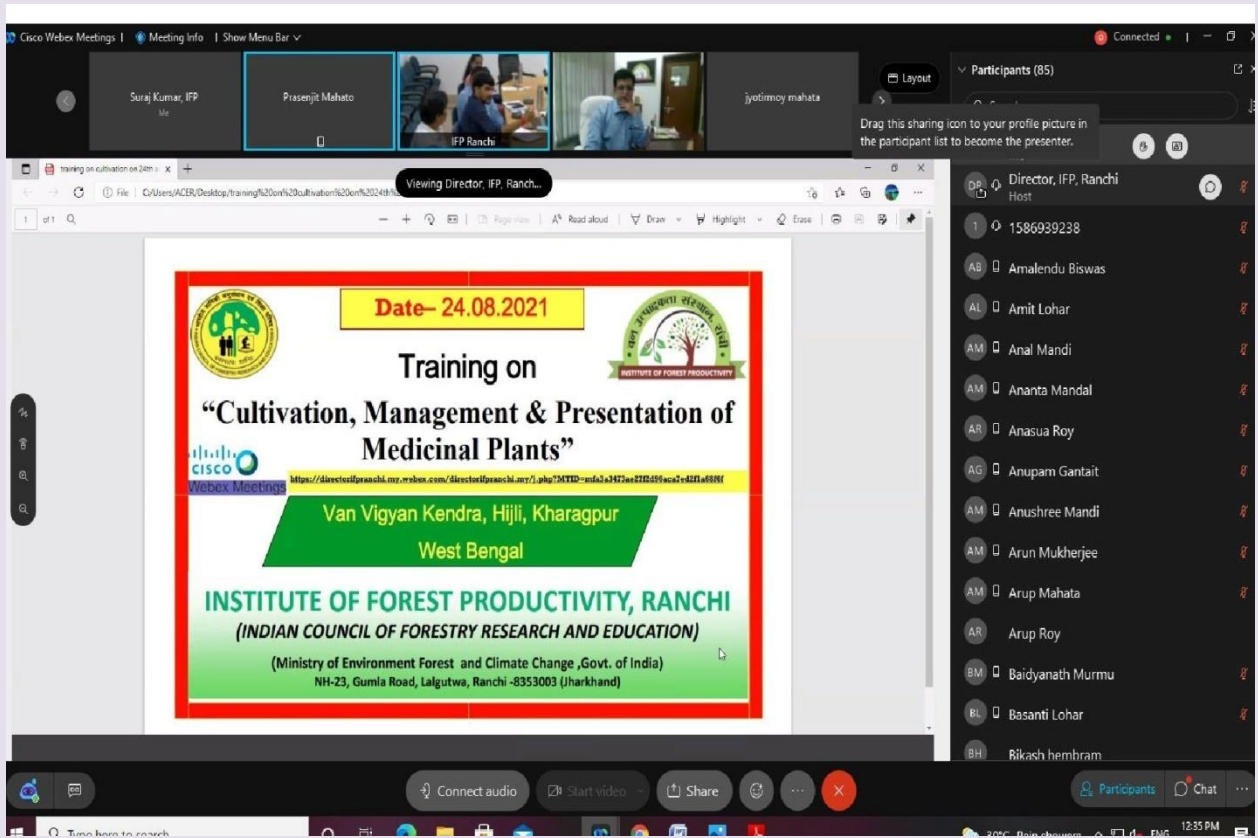
Webex Meetings

<https://directorifpranchi.my.webex.com/directorifpranchi.my/j.php?MTID=mfa3a3473ae27f2d96aca7ed2f1a68f6f>

**Van Vigyan Kendra, Hijli, Kharagpur
West Bengal**

INSTITUTE OF FOREST PRODUCTIVITY, RANCHI
(INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH AND EDUCATION)

(Ministry of Environment Forest and Climate Change ,Govt. of India)
NH-23, Gumla Road, Lalgotwa, Ranchi -8353003 (Jharkhand)



आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

Suraj Kumar, IFP Me

Rajeswari roy

Participants (100)

Search

SI Suraj Kumar, IFP Me

DR Director, IFP, Ranchi Host

IR IFP Ranchi

1 1586939238

AB Amalendu Biswas

AL Amit Lohar

AM Anal Mandi

AM Ananta Mandal

AR Anasua Roy

AG Anupam Gantait

AM Anushree Mandi

AM Arun Mukhe Arup Mahata


AM Arup Mahata

AR Arup Roy

AS Atanu Sarkar

BM Baidvanath Murmu

LEMON GRASS



LEMON GRASS	Common Names	Uses
<i>Cymbopogon schoenanthus</i> <i>L.Spreng</i>	<input type="checkbox"/> (C. citratus) West Indian lemongrass <input type="checkbox"/> Madagascar lemongrass <input type="checkbox"/> (C. flexuosus) <input type="checkbox"/> East Indian lemongrass <input type="checkbox"/> Cochin lemongrass <input type="checkbox"/> France Indian verbena <input type="checkbox"/> Malabar lemongrass	Leaf was used as <input type="checkbox"/> Stimulant <input type="checkbox"/> Carminative <input type="checkbox"/> Antiperiodic <input type="checkbox"/> Perfumery <input type="checkbox"/> Herbal tea <input type="checkbox"/> Hair oil <input type="checkbox"/> Soap making

Cultivation of Lemon Grass

Variety:	<input type="checkbox"/> OD-19 <input type="checkbox"/> SD-68 <input type="checkbox"/> CKP-25 by crossing C. khasianus and C. pendulus <input type="checkbox"/> CPK-F2-38
Soil and climate	<input type="checkbox"/> Warm and humid climate with plenty of sunshine and rainfall of 250- 280 cm per annum <input type="checkbox"/> Soil pH ranging from 4.5 to 7.5 is ideal

Suraj Kumar, IFP Me

Prasenjit Mahato

Participants (92)

Search

CK Chanakya kumbhakar

CM CHANDAN MANDAL

C chandrakona

C chandrakona

DR Director Institute of Forest Product...

DJ durga kant jha

FM Falguni Mal

HH Hiraboti Hembram

IR IFP Ranchi

ID indrajit das

JM Jaleswar Murmu


JB JFMC Member Burdwan

JH Jiban Haldar

JK Joyjit Karmakar

JM JT Mathew

JT Mathew



आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां



आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां



आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

Cisco Webex Meetings | Meeting Info | Show Menu Bar

Suraj Kumar, IFP (Me)

Baidyanath Murmu | Brinda ban Pant | CHANDAN MANDAL | Director Institute of Forest ...

Viewing IFP Ranchi's applica...

Medicinal plants in Indian perspective

India has 15 agroclimatic zones that comprise ~18,000 types of plants, of which 100-7,000 have therapeutic properties.

These medicinal plants are used in numerous applications in the Indian society and used to make medicines in traditional medical practices such as Ayurveda, Unani, Siddha, Sowa-Rigpa and homeopathy, also used in plant-based pharmaceutical companies.

~60 types of medicinal plants are traded, of which 178 species have yearly consumption levels of >100 metric tonnes.

~80% medicinal plants are extracted from the wild, while 69% plants are collected using destructive farming practices.

IFP Ranchi

Participants (99)

- Suraj Kumar, IFP (Me)
- Director, IFP, Ranchi (Host)
- IFP Ranchi
- 1586939238
- Amalendu Biswas
- Amit Lohar
- AMIT SAHA
- Anal Mandi
- Ananta Mandal
- Anasua Roy
- Animesh Sinha
- anirban roy
- Ankan Panda
- Anupam Gantait
- Anushree Mandi
- Arun Mukherjee

Connect audio | Start video | Share

Type here to search | 28°C Rain showers | 10:51 AM 8/24/2021

Suraj Kumar, IFP (Me)

Manas Sen | Brinda ban Pant | Prasenjit Mahato | 1586939238

Viewing IFP Ranchi's applica...

Director, IFP, Ranchi (Host)

16 different agroclimatic zones
30 vegetation zones
25 biotic provinces
626 biomes

There are 45,000 plant species in India

28 are considered extinct
124 endangered species
41 vulnerable species
34 unknown species
100 rare species

4,000-10,000 species face extraction locally, nationally, or regionally

11,000-20,000 plants have medicinal value in India

71 medicinal plant species classified as "rare"

Only 7,000-7,500 species are used

- Aherbals (1700 species)
- Herbs (1000 species)
- Modems (200 species)
- 1700 species
- 1000 species
- 200 species

IFP Ranchi

Participants (98)

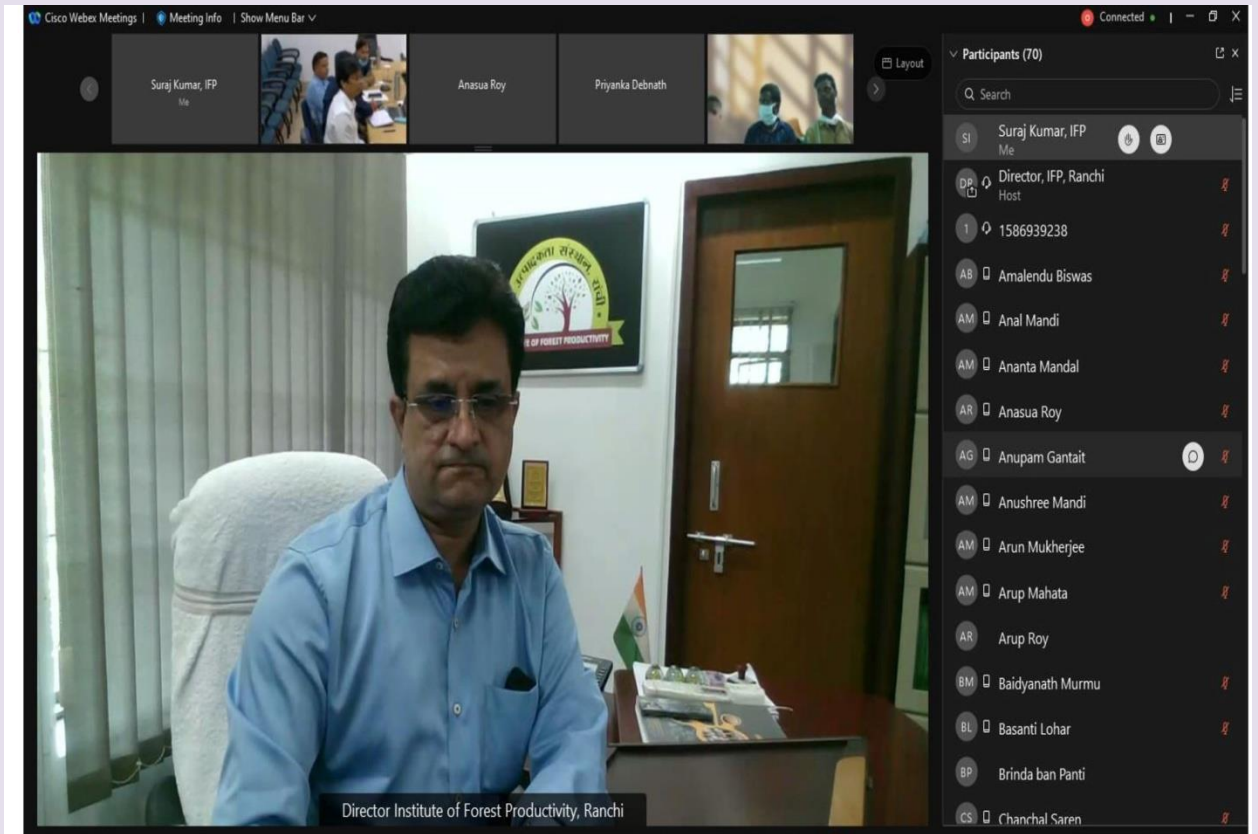
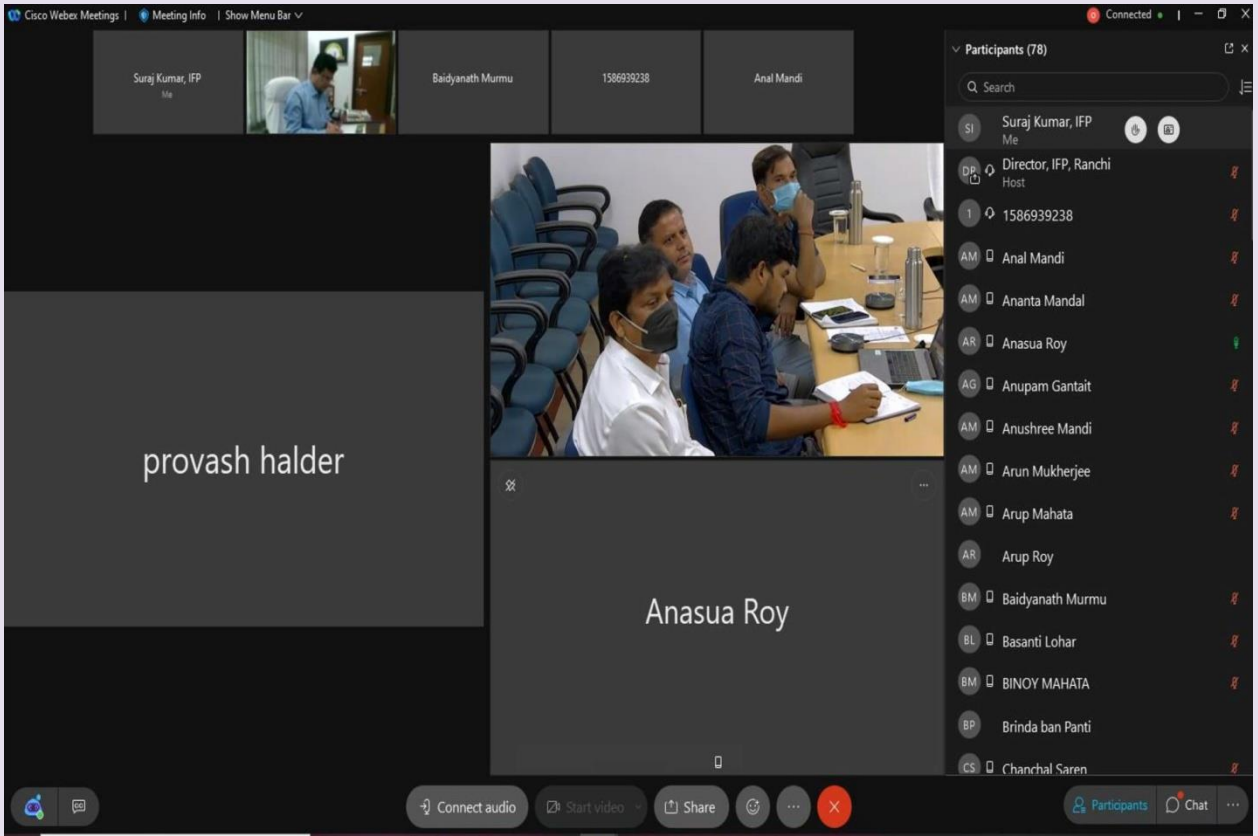
- Suraj Kumar, IFP (Me)
- Director, IFP, Ranchi (Host)
- IFP Ranchi
- 1586939238
- Amalendu Biswas
- Amit Lohar
- Anal Mandi
- Ananta Mandal
- Anasua Roy
- anirban roy
- Ankan Panda
- Anupam Gantait
- Anushree Mandi
- Arun Mukherjee
- Arup Mahata
- Arun Roy

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

BRAHMI 'Herb of Grace'	Common Names	Uses
<i>Bacopa monnieri</i> L.	<ul style="list-style-type: none"> ◇ Brahmi ◇ Jalauveri ◇ Jalantimba ◇ Sambrani ◇ Chettu ◇ Thyme-leaved gratola ◇ Bacopa. ◇ Babies tear ◇ Water hyssop. 	Plant is used in manufacturing medicines for <ul style="list-style-type: none"> □ Mental disorders □ Epilepsy □ Anxiety neurosis □ Insanity □ Enhancing memory □ Improve the receptive □ Retentive capacity of mind

**IMPORTANT MEDICINAL PLANTS
OF
EASTERN INDIA**

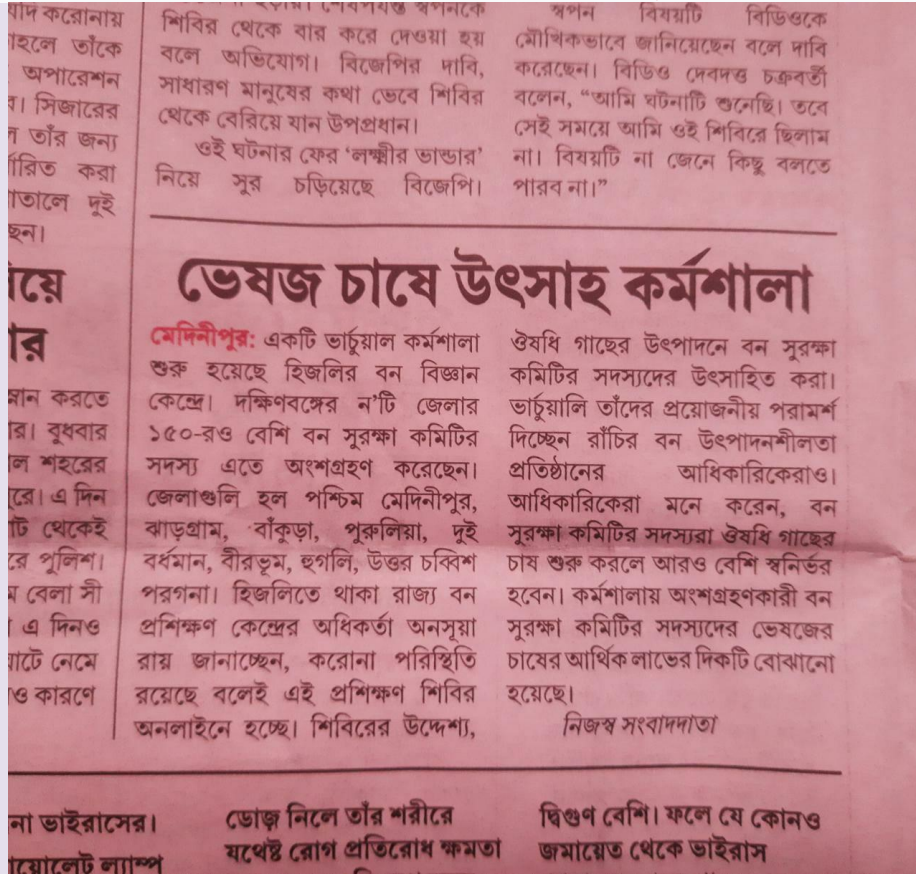
आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां



आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां



आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां



आयोजित कार्यक्रम का समाचार पत्र में प्रकाशन